अध्याय छठवाँ

उपसंहार

अध्याय छठवाँ

उपसंहार

परवेजजी का साहित्य साठोत्तरी महिला कथाकारों की श्रेणी में आता है। परवेजजी से प्राप्त महत्वपूर्ण देन के रूपमें हिन्दी कथा साहित्य में एक मुस्लिम लेखिकाने स्थान पा लिया तथा मुस्लिम औरतों के तथा समस्त नारी जाती के दुःख को वाणी देने की भरकस कोशिश की है। सामाजिक विषमता, धार्मिक अंधश्रध्दा, शोषण, कुरीतियाँ, आदि का चित्रण किया है।

परवेजजी के कहानियोंने देहाती तथा शहरी, गरीब तथा अमीर नारी के समस्याओं को स्वर दिया। नारी को पत्नी, प्रेयसी, वेश्या, दासी, भोग्या, के रूपमें चित्रित कर समाज के नारी के प्रति दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है। नारी का विवाह प्रेम, सेक्स की समस्या को जिस स्पष्टता से लेखिकाने व्यक्त किया है वह बात आपके परिवार तथा संस्कारोंको देखाते हुए बडी साहस की लगती है। गरीब तथा शहरी मध्यवर्ग के आर्थिक विपन्नता का चित्रण देखाकर लगता है लेखिकाने सामाजिक विषमता का चित्र खिंचा है। समाज में प्रचलित विवाह, प्रेम, काम जैसी धारणाओंको नये विचारों से बदलने की जरूरत महसूस की है। बलात्कारीता, पति से पिडित नारी के बारे में सामाजिक नजरिया बदलना आवश्यक माना है।

मेहरून्निसाजी की विशेषता है कि, आपने प्रगति की ओर उन्मुख होते वक्त पुराना तहस नहस करने की धारणा व्यक्त नही की है, तो जमाने के साथ बदलने का रवैया अपनाया है। मेहरून्निसाजी आधुनिक लेखिका होकर भी भारतीय मर्यादा, परिवार में विश्वास करती है। परवेजजी सुभद्राकुमारी चौहान, चंद्रकीरण सौनरेक्सा, सुमित्राकुमारी सिनहा, तेजरानी पाठक, कृष्णासोबती, रजनी पनिकर, कृष्णा अग्निहोत्री, मन्नु भंडारी, आदि की श्रेणी में आती है। "शिवानी", मृदुला गर्ग, दीप्ति खंडेलवाल, उषा प्रियंवदा, चित्रा मुदगल आदि लेखिकाओंने संपन्न परिवारों के दांपत्य जीवन तथा उच्च, शिक्षित परिवारों के दर्द को अपनी कहानियाँ का विषय बनया है, जब कि., परवेजजी का पूरा साहित्य गरीब, आदिवासीयोंका

आक्रंदन है, नारी के विभिन्न दुःखो से भर गया है।

युग परिस्थितियों ने, वैयक्तिक अनुभवोंने लेखिका के व्यक्तित्वपर गंभीर प्रभाव डाला है और इसके कारण लेखिका साहित्य में एक विशेष दृष्टिकोण उपस्थित करने में समर्थ हुई है, वह संक्षेप में इसप्रकार हैं –

1§ नारी की मुक्ति आर्थिक दृष्टी से आत्मनिर्भर हुए बिना सम्भव नहीं है। अतः नारी के लिए आर्थिक दृष्टीसे आत्मनिर्भर होना अत्यंत आवश्यक है।

2§ नारी की परंपरागत जडता, रूढिवादिता दूर होनी चाहिए और नारी को समय के साथ चलकर अपने ढंग से स्वयं की, देश और समाज की समस्याओंको हल करने में योग देना चाहिए।

3§ इन्सान ने हमेशा आशावादी, स्वाभिमानी रहना है, जिन्दगी के बेतरतीब दिनों को एक तरतीब से जीना सिखाना चाहिए।

4§ धार्मिक अंधश्रध्दा, सामाजिक कुरीतियाँ, दूर करने के लिए शिक्षा का प्रसार आवश्यक है।

5§ पुरातन की महिमा गाते रहने से ही हमारी समस्याएँ दूर नहीं होगी जबतक कि बदलती हुई परिस्थिति में समस्याओं के प्रति विवेकी दृष्टीकोण नही अपनाया जायेगा। अतः जीवन के प्रति विवेकपूर्ण दृष्टीकोण अत्यन्त आवश्यक है।

6§ जाति, धर्म के भेदों से परे मानव को विशुध्द मानवरूप में देखना न केवल मनुष्य को गरिमा प्रदान करता है वरन, राष्ट्रीय, सामाजिक और धार्मिक समस्याओंका हल भी प्रस्तुत करता है, अतः मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा आवश्यक है।

7§ मुस्लिम औरत तो आदिवासियोंकी तरह पिछडी हुयी है., जो पर्दे में रहकर अपने दुःख को दबाती घुटनभरी जिंदगी जी रही है., उसे पढालिखाकर

आत्मनिर्भर बनना है।

8§ मुस्लिम जाति में बहुपत्नित्व तथा जुबानी तलाक का रिवाज है., नये जमाने के साथ कानुनी बदलाव आना आवश्यक है।

9§ दहेज जैसी प्रथा का विरोध करना है, पति के अत्याचार से बचकर औरत को अपना अस्तित्व बनाये रखना है तो लोक-लाज, रस्म-रिवाजों के जंजीरों को तोडकर वास्तविकता का मुआईना कर अपने बलपर खडे होना है।

10§ बालविवाह, अनमेल विवाह जैसी कुप्रथा कानुनी तौरपर रोकना आवश्यक है।

11§ सामाजिक, राजकीय तथा आर्थिक प्रगति के लिए नारी समानता आवश्यक है।

12§ नारी का सामाजिक गौण दर्जा तथा परस्वाधिनता दूर करने के लिए औरतों को शिक्षा संबंधी सुविधा तथा उपलब्धियाँ प्राप्त होना आवश्यक है।

"परवेजजीने जीवन के विभिन्न-विभिन्न दु:खों के क्षणों से ये कहानियाँ ली है, जो पढने पर दु:खी भी करती है और सुखी भी, साथ ही हमारा मन कथ्य की गंभीरता एवं संवेदना की गहराई के कारण भटक जाता है। वह भूमि जहाँ कहानियाँ घटित हुई है, एक बैचेनी हमारे मनपर छा जाती है, जीवन की बिडम्बना एवं असहाय असंगति को देखकर बाद में जिद्दी भ्रमर की तरह हमारा पीछा करती है।"

परवेजजी ने विविध व्यक्तित्वों को रेखांकित किया है, जिनका अपना एक अलग अन्दाज है, अलग जीने का ढंग है। हिन्दी कहानी साहित्य में आपका नाम आदर के साथ लिया जाता है। साहित्य थोडा है, परन्तु "गागर में सागर है"

प्रश्नावली

१) आपका पूरा नाम। मेहरुन्निसा खान
२) पिताका नाम, उपनाम। अब्दुल हमीद खान
३) पतीका नाम, उपनाम।
४) जन्मतीथी जन्मस्थल। १० दिसम्बर १९४४, बहेला, बालाघाट
५) मेहरुन्निसा नामका अर्थ। प्यार करने वाली
६) आपको अपना नाम पसंद है ? हाँ, बहुत
७) शिक्षा - कहाँ तक कहाँपर बी. ए. तक टूटी-फूटी
८) लिखना कब से प्रारंभ किया ? बचपन से
९) साहित्यिक जीवन मे पतीका योगदान। कोई योगदान नहीं
१०) पहलीकहानी कौनसी। ? पांचवी कब्र, १९६३ में छपी
११) अब तक प्रकाशित साहित्य।
१२) प्रथम कहानी संग्रह कब प्रकाशित हुआ ?
१३) अब कुछ लिख रहे हो ? हाँ
१४) प्रथम कहानी संग्रह तथा उसके बाद प्रकाशित कहानी संग्रह
इसमें कहानीका विषय, शैली या अन्य विशेषत: क्रमश:
बदलती गयी है क्या। नहीं
अगर हाँ। - तो क्यों
ना तो क्यों
१५) आप कहानीके विषय नारी जगत से संबंधीत लेती हो क्यों ? हाँ
१६) नारी है इसलिए या अन्य वजह हाँ
१७) आपकी कहानीके विषय आपने आसपास के परिवेश से लिए हैं।
~~या अपनी कल्पनाजगत से~~
१८) आपको कौनसी कहानी अधिक प्रिय लगी। क्यों। ? सभी
१९) भारतीय मुस्लिम स्त्री के संबंध मे आपके क्या विचार है साहसी
२०) भारतीय नारी मे आप मुस्लीम स्त्री की समस्याओंको अलग
मानती हो क्या। नहीं
हाँ या ना तो क्यों।
२१) दुनिया इक्कीसवी सदीके ओर जा रही है पर मुस्लीम औरत
मध्ययुग में जा रही है इस के लिए आप किन किन स्थितियाँ
कानून, राजनिती को जिम्मेदार मानती हो क्या।

नारी चाहे मुस्लिम हो या हिन्दू दोनों की स्थिति बराबर है, दोनों ही अपने परिवेश [illegible] हमेशा [illegible] नहीं। १०० २०० दूसरों ने नहीं अपनों ने लूटा।

२२) इस संबंध मे कुछ सुधार की अपेक्षा रख सकते है या नहीं हाँ
२३) रखते है तो किस प्रकार। [illegible]
२४) नहीं रखते तो किन किन वजहसे। [illegible]
२५) मुस्लीम स्त्री के संबंध में जो नया विधेयक आया है उसके
संबंध में आपके विचार क्या है। [illegible]
२६) आपके सामाजिक कार्य का परिचय।
२७) साहित्य के अलावा आपका लेखन कार्य।
२८) भारतीय नारी समस्या के संबंध मे आपके विचार। [illegible]
२९) सुधार आंदोलन के संबंध मे आपके विचार। [illegible]
३०) आपकी दृष्टी से इन समस्याओंका समाधान या हल क्या हो
सकता है। [illegible]
३१) आप अपनी कहानियोंकी विशेषता: बताईये। [illegible]
• आप पर साहित्यिक दृष्टीसे किसका प्रभाव है। [illegible]
३२) हिंदी कहानी लेखिकाओंके बारे में आपकी क्या राय है। [illegible]
३३) हिंदीकहानी लेखिकाओमे आप अपना स्थान कहाँ निर्धारित करती है।
३४) आप अपनी कहानी मे स्त्री को कहाँ तक न्याय दे सकी। [illegible]
३५. साहित्य समाज परिवर्तन का साधन बन सकता है क्या। हाँ बना है
३६) पुरूष लेखक ने स्त्री को कहाँतक न्याय दिया है। [illegible]
३७) स्त्री लेखिकाने कहाँ पुरूषोंको कहाँ तक न्याय दिया है। [illegible]
३८) लेखिकाओंका दायरा घरतक ही सिमित है ऐसा मानते है आप कहाँ तक
सहमत है। हाँ,
३९) भविष्य में साहित्य सेवा के संबंध मे आपने क्या सोचा है [illegible]

.. ..

मेहरुन्निसा परवेज
[illegible]

आधार ग्रंथसूची

अ. क्रं.	पुस्तका का नाम	लेखाक का/संपादक का नाम	प्रकाशक का नाम तथा काल
01§	आदम और हव्वा	मेहरून्निसा परवेज	नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली-1972.
02§	गलत पुरूष	मेहरून्निसा परवेज	नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली-1978.
03§	टहनियोंपर धूप	मेहरून्निसा परवेज	
04§	फाल्गुनी	मेहरून्निसा परवेज	पराग प्रकाशन, दिल्ली, 32, 1978.
05§	आँधीों की देहलीज	मेहरून्निसा परवेज	
06§	उसका घर	मेहरून्निसा परवेज	
07§	कोरजा	मेहरून्निसा परवेज	
08§	अकेला पलाश	मेहरून्निसा परवेज	वाणी प्रकाशन, दिल्ली.
09§	कहानी और कहानीकार	मोहनलाल जिज्ञासू	आत्माराम ॲन्ड सन्स, दिल्ली.
10§	आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ	उमेश माथुर	
11§	नयी कहानी उपलब्धी और सिमाएँ	गोरधनसिंह शेखावत	
12§	समकालीन कहानी रचना मुद्रा	पुष्पपाल सिंह	राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, 1982

13§	उषादेवी मित्रा व्यक्तित्व एवं कृतित्व	प्रभा सक्सेना	पंचशील प्रकाशन, 1984
14§	यशपाल एक समग्र मूल्यांकन	डॉ. सुनिलकुमार लवटे	पराग प्रकाशन, दिल्ली, 1984.
15§	ऋतुचक्र	डॉ. नेमीचंद्र जैन	विक्रमकुमार आभुखा, रेखांकन, 1989.
16§	ओलांडताना	लीला पाटील	श्रीविधा प्रकाशन, पुणे, 1988.
17§	स्त्रीचे समाजातील स्थान आणि भूमिका	अनुसया लिमये	समाजवादी महिला सभा, विश्वकर्मा मुद्रणालय.
18§	मुस्लिम सत्यशोधक मंडळ दोन दशकांची वाटचाल	मुस्लिम सत्यशोधक मंडळ	निहाल शिपूरकर, भारती मुद्रणालय, 1989.
19§	मानुषी	मधु किश्वर	सी/1202 लाजपतनगर, मधु किश्वर मार्च, 1986.
20§	मानुषी	वही	1988, 1989, अंक.
21§	हिन्दी कहानी के सौ वर्ष	डॉ. वेदप्रकाश अभिराम	मथुरा मधुबन प्रकाशन.
22§	लेखिका प्रतिनिधी कहानियाँ - 83		लेखिका संघ अभिव्येजना
23§	हिन्दी कहानी 1976	डॉ. राकेश गुप्ता	ऋषीकुमार चतुर्वेदी.
24§	भारतीय नारी दशा और दिशा	आशारानी व्होरा	नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली.
25§	संभाषण	महादेवी वर्मा	साहित्यभवन, प्रायव्हेट लिमिटेड.
26§	मोकळया दाही दिशांना मेटण्या भिंती निघाल्या	महिला दक्षता समिती, कोल्हापूर - 1986.	

27§	चौदह फेरे	शिवानी	वाणीप्रकाशन, दिल्ली.
28§	मेरी प्रिय कहानियाँ	मन्नू भंडारी	राजपाल एण्ड सन्स.
29§	कितना बडा झूठ	उषा प्रियंवदा	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1972.
30§	मी बाई आहे म्हणून		भारतीय अर्थविज्ञान, वर्धिनी.
31§	मराठी लेखिका-चिंता आणि चिंतन	बालचंद्र फडके	श्रीविद्या प्रकाशन.
32§	आधुनिक हिन्दी मुक्त काव्य में नारी	डॉ. सावित्री डागा	देवनगर प्रकाशन, जयपूर.
33§	भक्तिकालीन राम तथा कृष्णकाव्य की नारीभावना एक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. शामबाला गोयल	
34§	आधुनिक हिन्दी नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना	डॉ. वीणा गौतम	
35§	हिन्दी लघुउपन्यास	घनश्याम "मधुप"	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली.
36§	धर्मयुग, नारी जागरण की चुनौती, भारतीय स्त्री पत्नी या दासी		23 एप्रैल 1988 का अंक
37§	स्त्री जीवन अन्वय आणि अर्थ	डॉ. दु. का संत	महाराष्ट्र ग्रंथ भांडार, 1976.
38§	मुलगी झाली हो	ज्योती म्हापसेकर	दिनकर गांगलग्रंथाली, 1984.
39§	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी लेखिकाओंके उपन्यासोंका समाजशास्त्रीय अध्ययन	शीला देशमुख	1983.

40§	रविवार हिन्दी पत्रिका माया त्यागी कांड		फरवरी 1989 का अंक
41§	पुरूष केंद्री	छाया दातार	मुंबई 1984.
42§	हिंन्दी उपन्यासोंमें नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण	डॉ. विमल सहस्त्रबुध्दे	पुस्तक संस्थान, 1974., नेहरूनगर, कानपूर.
43§	हिन्दी साहित्य के कुछ नारीपात्र	डॉ. माधुरी दुबे	आत्माराम एण्ड सन्स, राजस्थान.
44§	समकालीन कहानी	पुष्पपालसिंह	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.
45§	अन्तिम चढाई	मेहरून्निसा परवेज	वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1982.